MODERN CHILD PUBLIC SCHOOL

Nangloi, Delhi – 110041

TARUN JHANKAR

January – March, 2020-21

आओ मिलकर लड़ें !!

गली-मोहल्लों में फैला सन्नाटा है,
पर्यावरण चीख-चीखकर मनुष्य को बतलाता है,
कुदरत को उसने बहुत सताया है।

मंदिर-मस्जिद अब सब है बंद,
डॉक्टर क्योंकि भगवान हैं अब।

प्रधानमंत्री ने बोला करो पालन लॉकडाउन का,
क्योंकि फ़र्ज़ है ये हर हिंदुस्तानी का।

मिलकर हमें कोरोना को हराना है,
घर से कहीं नहीं जाना है।

सब मिलकर यदि लड़ें कोरोना की जंग,
तो अवश्य ही नहीं कर पाएगा कोरोना हमें तंग।

पूर्वकाल में भी भारत पर बहुत से संकट आए,
पर हिंदुस्तान की ताक़त के आगे टिक न पाए।

इसलिए ही तो कहा है,एक कदम तुम भी उठाओ देश के संग,
आओ मिलकर लड़ें कोरोना की जंग।

-ऋषिका अग्रवाल
दसवीं-'अ'
A1014

अगर मैं प्रधानाचार्या होती

अगर मैं अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या होती,

तो उसके विकास में दिन रात एक कर देती ।

पढ़ाई के साथ नैतिक मूल्यों को जोड़,

उन्हें सामान्य विकास की ओर अग्रसर करती।

बच्चों से जीवन संबंधी प्रश्न पूछकर,

उनका धैर्य जगाती ।

धैर्य से निर्णय वे ले पाते , अपने जीवन को ओर सफल बनाते।

जिस शैली में उन्हें रूचि होती,

उस शैली में मैं उन्हें पढ़ाती।

भिन्न-भिन्न विषयों का विश्लेषण कराती।

जीवन की समस्याओं को , वास्तविकता में बदलकर समझाती।

पढ़ाई में उनकी रूचि बढ़ाती ,

उनके जीवन का लक्ष्य पूर्ण कराती ।

हर्षिता
(नवीं ब)

आया है नया साल

आया है नया साल,
लेकर खुशियों की बहार।

नई रोशनी,नई मुस्कान,
नया सा होगा पूरा संसार।

पिछले साल आयी भयानक महामारी,
आपदाओं और बेरोज़गारी से हिल गई दुनिया सारी ।

अनेक लोगों की हुई मौत, अनेक हुए लाचार,
दिक्कतें हुई सभी को, छूटा अपनों का साथ।

पर अब फिर,आया है नया साल,
भुलाकर सारे गम करो एक नई शुरुआत।

सब अच्छा होगा,चेहरों पर होगी प्यारी मुस्कान,
आया है नया साल, ज़रूर आएँगी खुशियों की बहार।

मीनाक्षी
(आठवीं ब)

परीक्षा की तैयारी

छोड़कर बच्चो बातें सारी,
करो परीक्षा की तैयारी।
खेलकूद अब बंद करो,
अच्छे अकं लाने का अब प्रयत्न करो।
टी०वी० फिल्म देखना छोडो़,
बस पढ़ाई से नाता जोड़ो।
मेहनत करने वालों के आगे,
दुनिया सदा ही हारी है।
पढ़-लिखकर विद्वान बनकर,
खुद को साबित करने की, अब तुम्हारी बारी है।
अपने श्रम से बना सकोगे,
सुंदर जीवन की फुलवारी।
छोड़कर बच्चो बातें सारी,
करो परीक्षा की तैयारी।

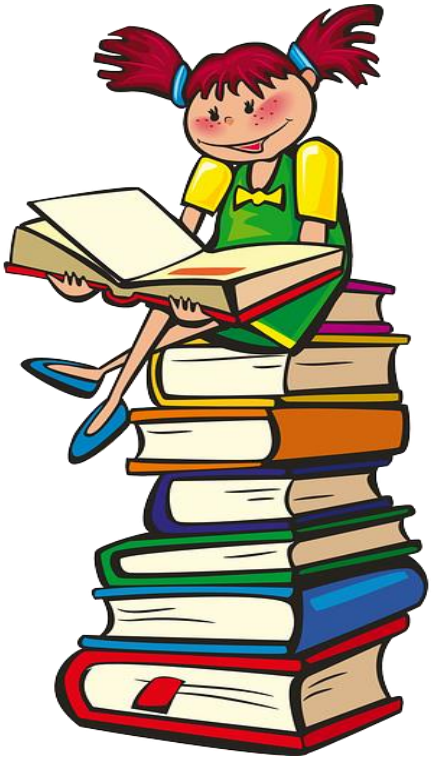

सिया गर्ग
(छठीअ)

बेटियाँ

बोये जाते हैं बेटे और उग जाती है बेटियाँ ।

खाद - पानी बेटों में और लहराती हैं बेटियाँ ।

एवरेस्ट की ऊँचाइयों तक ठेले जाते हैं बेटे और चढ़ जाती हैं बेटियाँ ।

कई तरह गिरते हैं बेटे संभाल लेती हैं बेटियाँ ।

शुभ के स्वप्न दिखाते हैं बेटे, जीवन तो बेटों का है, मारी जाती हैं बेटियाँ

फिर भी दुत्कारे जाने पर क्यों याद आती हैं बेटियाँ ।

बुढ़ापे का सहारा हैं बेटे, भविष्य का आसरा हैं बेटियाँ ।

फिर भी बिना किसी आस के काम आती हैं बेटियाँ ।

बिगड़ी को संवार जाती हैं बेटियाँ , खूबसूरत सा मुकाम दे जाती है बेटियाँ

याशिका भारती
(आठवीं स)